दादीजी का व्यक्तित्व पारदर्शिता से ओत-प्रोत था - ब्र.कु.मृत्युंजय

एक बार लोकसभा के तत्कालीन विपक्ष के नेता माननीय् वाजपेयी जी आबू आये थे। हमने उनको ज्ञानसरोवर में आने के लिए निमंत्रण दिया था। वहां उन्होंने भरी सभा में अपना विचार व्यक्त करते हुए कहा कि दादीजी खुद ही एक बड़ी नेता हैं, उन्होंने अपने जैसे इतने सारे कार्यकर्त्ताओं को तैयार किया है, यह बहुत प्रशंसनीय कार्य है। दादीजी का व्यक्तित्व पारदर्शिता से ओत-प्रोत है। उनके नेतृत्व में ईश्वरीय विश्व विश्वद्यालय समाज परिवर्तन की बहुत बड़ी सेवा कर रहा है। ईश्वरीय विश्व विद्यालय एक खुली किताब है। दादीजी न केवल ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियों की, राजनेताओं की प्रेरणास्रोत थीं परन्तु धर्म नेताओं की भी प्रेरणास्रोत था श्रद्धेया थीं। कोई महामंडलेश्वर हो, जगद्गुरु हो, साधु-संत-महात्मा हो, चाहे उत्तर भारत के हों, चाहे दक्षिण के, दादी जी को बहुत सम्मान और पूज्य भावना से देखते थे। उनके लिए भी दादी जी आदर्श थीं।

दादीजी के नेतृत्व में मुख्यालय आबू पर्वत पर और देश के अन्य स्थानों पर अनेक धार्मिक सम्मेलन हुए। आये हुए सभी संत-महात्मा-गुरु लोगों ने यह अनुभव किया और अपने भाषणों में व्यक्त किया कि दादी जी एक आदर्श महिला हैं तथा आज के संसार में अनुकरण करने के योग्य एक अद्वितीय आध्यात्मिक नेता हैं।

दादी जी नम्रता, सरलता, मातृवत् भावना की मूरत थीं

दादी से अनेकानेक नेता, अभिनेता, वैज्ञानिक, उद्योगपति आदि को मिलते हुए मैंने देखा है। उन्होंने दादी से मिलकर अपने आपको धन्य समझा है और कुछ न कुछ कमी-कमजोरियों को छोड़ने की, कुछ न कुछ अच्छाई को धारण करने की प्रेरणा ली है। दादी जी के महावाक्यों में इतनी शक्ति तथा ममता होती थी कि सामने वाला उनकी बात, उनकी शिक्षा सहर्ष मान लेता था और अपने जीवन को परिवर्तन कर लेता था। दादीजी की नम्रता, सरलता, अपनापन, मातृवत् भावना उनके समीप आने वालों को अपने में परिवर्तन लाने की प्रेरणा देती थीं।

पूर्व राष्ट्रपति एवं वैज्ञानिक डॉ.अब्दुल कलाम जैसे देश के तथा विदेश के अनेक बड़े-बड़े वैज्ञानिकों को दादीजी से मिलाते समय मैंने देखा कि दादी जी एक अथॉरिटी बन, महान अनुभवी बन, एक हितकारी अलौकिक माँ बन उनको राय देती थीं, शिक्षा देती थीं, निर्देश भी देती थीं। उन्होंने भी बड़े प्यार से तथा सम्मान से दादी जी की बातों को स्वीकार किया। डॉ.अब्दुल कलाम जी ने अनेक बार दादी जी से मुलाकात की। वे भारत के राष्ट्रपति बनने के बाद भी, जब दादी जी की तबीयत ठीक नहीं थी, तब दादी जी से मिलने आबू आये थे। इससे हमें पता चलता है कि दादीजी का जीवन, दादीजी का व्यक्तित्व कितना प्रभावशाली और प्रेरणाप्रद था।

विनम्रता की मूरत थीं दादी - ब्र.कु.दिव्यप्रभा, मुम्बई

दादीजी सरलता, विनम्रता एवं निरहंकारिता की मिसाल थीं। एक बार बोरीवली सेंटर से जुड़े एक सेंटर के भाई-बहनें पाण्डव भवन में सेवा के लिए आए हुए थे। दादीजी क्लास के बाद पाण्डव भवन के आंगन में बैठकर सभी से मिलते थे। कारोबार आदि की बातचीत में दादीजी व्यस्त रहते थे। तो वे सेवाधारी दादीजी को दूर-दूर से देखते रहते थे। रोज ऐसे ही वे दादीजी को निहारते रहते थे लेकिन उनकी हिम्मत नहीं होती थी समीप जाने की। एक दिन दादीजी ने खुद होकर उन सभी को बुलाया और प्यार से बैठाकर हालचाल पूछा और टोली खिलाई। आज भी वे सेवाधारी सभी उस अनुभव को सुनाकर भावविभोर हो जाते हैं। इतनी बड़ी दादीजी और इतनी सरल व निर्मल थीं जो हर एक के दिल में एक मुलाकात में ही अमिट छाप पड़ जाती थी। कई बार तो यह भी देखा गया कि दादीजी पहले से ही झुककर सभी को 'ओम शान्ति' कहती थीं। हम सभी धन्य हैं जो ऐसी दादीजी का सानिध्य प्राप्त किया। इतनी बड़ी संस्था की मुख्य प्रशासिका थीं लेकिन उतनी ही विनम्रता की मूरत थीं, उनमें जीवन में अभिमान का रिंचक भी नहीं था। सबके साथ वे बहुत सहजता से मुलाकात करती थीं। छोटा हो या बड़ा सभी उनसे बहुत अपनेपन का अनुभव करते थे।

दादी प्रकाशमणि के साथ ब्र.कु.दिव्यप्रभा

आरंभ में यज्ञ में कुर्सिया या सोफे आदि नहीं होते थे। सभी नीचे जमीन पर बैठकर ही मुरली सुनते थे। अव्यक्त बापदादा जब जाते थे तो दादी व दीदी आगे-आगे गद्दी लेकर जमीन पर बैठते थे। वे पूरी मुरली सुनते व लिखते थे। उस समय टाइप आदि की सुविधा उपलब्ध नहीं थी। दादीजी समर्पण व अथक साधना की स्वरूपा थीं। दादीजी जब तक बाबा विदाई न ले तब तक उठते नहीं थे। बाबा से मिलने आने वालों की व्यवस्था भी करना होता था। सभी का ख्याल रखते हुए सभी को संतुष्ट व खुश करना, यह दादीजी को परमात्म-गिफ्ट वरदान के रूप में प्राप्त था।

दादीजी से मिलने पर अपनेपन की महसूसता होती थी। ऐसा लगता था कि सच्चे परिवार से मिलन हो रहा है। जब पार्टी मधुबन से वापस जाती थी तो हर एक से पूछती थी कि मधुबन से क्या लेकर जा रहे हो। जाने वाले भाई-बहनों को मिश्री, इलाइची व बादाम खिलाकर भेजती थी। इस प्रकार हर एक को इतना प्यार, स्नेह व शक्ति दादीजी से मिलती थी। यज्ञ की पहली टेलीफिल्म 'दिव्य ज्योति' जब बनाई थी। तब मुम्बई से ही सारी प्रोफेशनल टीम मधुबन आई थी। उस समय भी वे सभी दादीजी के सहयोग व प्यार से अभिभूत हुए। सारे एक्टर्स व कैमरा आदि की टीम इतनी प्रसन्न हुई कि वे आज भी उसका गायन करते हैं। दादी जी में उमंग-उत्साह का अथाह भण्डार था। उनके सम्पर्क में आते ही सभी उमंग-उत्साह में उड़ने लगते थे। बोरीवली का बड़ा सेंटर निर्माण भी दादीजी के सहयोग व प्रेरणा से ही सम्भव हो पाया था। दादीजी के सम्मुख आते ही सभी में खुशी का वातावरण छा जाता था।

मुझे याद आता है कि हम एकाउण्ट में आए हुए थे उस समय दादीजी बहुत बीमार थीं। तो जब हम वापस जाने वाले थे तो हमें दादीजी से मिलने की बहुत कशिश हुई। वहां सभी बैठे हुए थे। तो मुझे संकल्प आया कि मुझे दादीजी को गीत की कुछ लाइनें सुनानी है। बाकी तो सभी ने कहा कि दादीजी की तबियत ठीक नहीं है आप गीत नहीं सुनाओ। लेकिन दादीजी ने मेरी इच्छा को मान देते हुए इशारा किया कि आप सुनाओ। वह मेरी दादीजी से अंतिम मुलाकात थी। क्योंकि दादीजी उसके बाद काफी बीमार हो गये तो बात भी नहीं कर पाते थे। फिर मुझे समझ में आया कि मुझे क्यों इतनी कशिश हो रही थी उनसे मिलने के लिए।

पूर्व जन्मों के संस्कार

एक बार की बात है एक बहन अपने छोटे बच्चे को पढ़ा रही थी। बच्चा वैसे कोई बहुत तेज नहीं था। मीडियम फोर ग्रेड पढ़ाई में उसका मार्क्स आता था। वह के.जी. में या फर्स्ट में पढ़ता था। माता को उस बच्चे से इतनी अपेक्षायें थी कि मेरा बच्चा हर बात में फर्स्ट आना चाहिए और इसलिए उसके प्रति विशेष ध्यान भी देती थी। लेकिन बच्चे की मन की एकाग्रता थोड़ी कम थी। इसलिए पढ़ाते समय जो स्पेलिंग उसको देती थी वन, टू, थी लिखने के लिए वो बच्चा जब भी फोरटी लिखने जाता था तो गलती करता था। फोरटी लिखना उसको नहीं आता था। बाकी तो सारी स्पेलिंग ठीक लिख लेता था। लेकिन फोरटी में उसकी गड़बड़ जरूर होती थी। अब माँ भी पीछे पड़ गयी कि फोरटी क्यों नहीं आता है। फोरटी लिखने के लिए इसको आना ही चाहिए। अरे भाई एक स्पेलिंग ही तो नहीं आ रही है, क्यों पीछे लग रहे हो। लेकिन उसको लगा कि इसकी एक भी स्पेलिंग मिस्टेक नहीं होनी चाहिए। एक दिन माँ बाजार गई कुछ सब्जी खरीदने के लिए, जब वापस आती है तो देखती है कि बच्चा बाहर खेल रहा है। तो उसको बहुत गुस्सा आया कि कल तेरी परीक्षा है, तेरे को फोरटी लिखना अभी तक आता नहीं है और तू बाहर खेल रहा है। तुरंत उसने बच्चे को बुलाया और स्वयं सब्जी काटने बैठी और बच्चे को सामने बिठाया कि चलो स्पेलिंग लिखो। बच्चे ने लिखना शुरू किया और लिखते-लिखते जब फोरटी पर आया तो फिर उसकी गलती हो गयी। जैसे ही गलती हुई उस माँ को इतना गुस्सा आया कि जो हाथ में चाकू था वही उसको ठूँस दिया। अब बच्चा तो मर गया। बाद में इतना रोई, इतना

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, ब्र.कु.उषा

पश्चाताप करे कि मैं तो उसको सिखाना चाहती थी। पता नहीं ये मेरे से कैसे हो गया, चाकू कैसे चल गया?

अब ये तो हरेक जानता है कि जहाँ माँ के बच्चे के साथ इतना लगाव है, तो वो जान-बूझकर तो ऐसा कार्य नहीं करेगी। लेकिन इसको क्या कहेंगे? यही कहा जाता है कि वैसे तो उसका रेशनल एक्सप्लेशन कोई नहीं है। लेकिन इतना ही कहा जाता है कि कोई जन्म का इन दोनों आत्माओं के बीच का कर्मों का हिसाब-किताब था। वो इस जन्म में माँ और बेटे के रूप में आकर चुक्तू हुआ।

अब वो पूर्व जन्मों का हिसाब-किताब इस जन्म में भी पच्चीस साल के बाद उभरता है और इतना तीव्र गति से वह पूर्व जन्म का संस्कार क्रियान्वित हो जाता है कि वो माँ की बुद्धि या विवेक कार्य नहीं कर पाया कि वो क्या कर रही है। उसकी इंद्रियाँ इस प्रकार चल गईं, जो उसको पता भी नहीं चला। ठीक इसी प्रकार काफी सालों तक वो सुसुप्त रह सकता है लेकिन जब उसका उदय होने का समय आता है तो कभी-कभी वो पूर्व जन्म का संस्कार इतना तीव्र वेग से चलता है कि समझदार से समझदार व्यक्ति भी समझ नहीं पाता कि उससे कैसे ये कार्य हो गया! कई बार समझदार व्यक्ति कोई गलती कर देते हैं और उनसे पूछो कि ये कार्य कैसे किया, तो कहेंगे पता ही नहीं चला कि ये कैसे हो गया अर्थात् उस वक्त पूर्व जन्म के संस्कार ने उसके विवेक के ऊपर हावी हो गया कि वो किस प्रकार का कर्म करने जा रहा है उसकी इसे शुद्ध-बुध भी नहीं रही। इस तरह से पूर्वजन्म का संस्कार क्रियान्वित होता है और बीच-बीच में इस जन्म के कर्म के साथ वह इंटरफिअर भी करता है। जब वो इंटरफिअर करता है तब व्यक्ति की बुद्धि और विवेक काम करना बंद कर देता है और वो कर्म प्रत्यक्ष में हो जाता है। ये दूसरे प्रकार के संस्कार हैं।

तीसरे प्रकार के संस्कार हैं - खानदानी संस्कार - मात-पिता द्वारा प्राप्त संस्कार। कोई बच्चा माँ जैसा है, कोई बच्चा पिता जैसा है और कोई बच्चा दादा जैसा भी हो जाता है। यानी ये खून के संस्कार हैं। एक बार एक छोटा बच्चा, दस-बारह साल का होगा। बहुत झूठ बोलता था। बात-बात में झूठ बोलता था। कई बार मैंने उसको झूठ बोलते हुए देखा। आखिर एक दिन मैंने उसको बुलाया और उससे पूछा कि तू झूठ क्यों बोलता है? तो वह हंसने लगा, वो जानता था कि मैं झूठ बोलता हूँ। मैंने उससे पूछा कि अच्छा ये बताओ, झूठ बोलने से तुम्हें क्या मिला? तो कहने लगा कि कुछ नहीं, तो फिर क्यों झूठ बोलता है, तो कहता है कि बस ऐसे ही बोल लेता हूँ। मैंने उस बच्चे को समझाना चाहा कि देखो तुम झूठ बोलकर के अपनी छवि खराब कर रहे हो। - क्रमश: